APPENDIX 3.

Works on and references to the Mālā Prasaṅga

1. Māloddhāra (i.e. Caturtha Taraṅga) – Gopaldas Vyārāvālā
2. Mālā-prasaṅga – some unknown writer (vide Anugraha Vol.13 P.445)
3. Mālā-prakaraṇa – Bhagavānadāsa of Pati
4. Mālā – Uddhāra – Vallabhbhai
5. S'rī Gokules Pratāpa Mārtaṇḍa – Gopal Gahvara
6. Kallola VII – VIII – IX – Kalāyaṇa Bhaṭṭa
7. Sajjana Maṇḍana – Mahāvādāsa
8. Mālā – Prasaṅga – Balabhadra
9. Pāṇa – Caritra – Giridharadāsa.

Several poets have referred to this event in highly enlogistic terms. Some of them are as under: –

Gujarati –

श्रीगोकुलेशजी: अमारी तुलसीनी माला.....बादशाह अमने एपाछी आपो छो.
जहांगीर : सहु सहुना धर्मपाळो, धर्मनिषेधनां फरमान सहु रद हो ।

—न्हानालाल कृत जहांगिर–नूरजहां पृ०११५–१६

Sanskrit

(१) संन्यासिवेशमोहित साधुगणः सोऽसुरो हरिद्रोही
येन निराक्रियतासौ गोकुलनाथो हरिर्जयति।। -
-वल्लभस्तोत्रे कल्याण भट्टकृते।

(२) मालारक्षणकर्ता च शुद्ध सत्कीर्तिवर्धनः दुष्टानां दोषहन्ता च
दो भक्त निर्भयकारकः। - विष्णुदासरचिते
अष्टोत्तरशतनाम्नां स्तोत्रे।

(३) पाषाण्डिदंडी संप्रोक्त प्रचंडाधर्मखंडनः। स्वधर्मस्थापकोऽखंडधरामंडल मंडनम्।।
इतिकोपित पृथ्वीशाकारितस्तत्समीजगः।
उल्लंघिततदीयाज्ञः सत्यसंधोव्रजेस्थितः।।
- कृष्णरामकृतायां नामरत्न/मालावल्याम्।

(४) चिद्रूपमतखंडनायनमः। मालादृढ स्थापकायनमः।....
पृथ्वीशाज्ञोल्लंघनाय नमः।
तत्समीपे काश्मीरगताय नमः। काश्मीरपावनकर्त्रे नमः।
श्रीहरिरायजीकृतायां श्रीगोकुलाष्टोत्तरनामावल्याम्।

(see also appendix 7: Gokulāṣṭaka of Kṛṣṇarāya
and Harirāya)

Hindi

(१) मति जानी ख्याल श्री गोकुलनाथजीकी माला है।
बखानी दुहूँ वेद मरजाद हू बखानी है।
डारे गुदी बीच माला अमृत रसाला है।
बुलाए जहांगीरने जाय के जुआब दियो।
हिन्दू की पति राखी श्रीगोकुलनाथ प्रतिमाला है।
"प्राननाथ" कहे बात सुनो सबै कान दै।

(१) गोकुलका फकीर देखो आए कौन भाव से,
तें डारे गुदि बीच गुंज औ वनमाला है।
मागता हुं माला वे देता हैं जीव कौं ,
करै याद साइ कौं संग नंदलाला है।
हुआ है निडर मैं तो देता हूं दुसाला।
मेरे माला बंद और ग..... साला है।
"प्राननाथ" बात कहै सुनो सब कान दे।
मति जानो ख्याल श्री गोकुलनाथजीकी माला है।

(२) अधम उद्धारन तुम नाम वल्लभ
भक्ति पेज प्रतिपादन
तपसि पास निवारन
दुष्ट संहारन कारन
तिलक माल उधारन
माननी मान निवारन
रसिक सिरोमनि रस संचारन
कीरति उज्वल जग विस्तारन
"वृंदावन" गोकुलपति नागर प्रगटे निजजन कारन।

(३) दंडी मद मर्दन जु फिर माला वाद सुजान
-संप्रदाय कल्पद्रुम पृष्ठ १४०-४२

(५) शाह कही सो तें न करी करी जो वेद पुरानन भाखी।
मालतिलक जनेऊ के कारन एडन पेंडन नाखी।।
श्रीपति कहैं जहांगीर के खान उमराव जेते सब साखी।
श्रीविठ्ठलनाथजूके श्रीगोकुलनाथजू सब हिन्दुन की पतिराखी।।

(६) टेक की, टेक की, टेक की, हेगिरि टेक हरै तो हरै ध्रुवतारी।
श्रीगोकुलनाथजु माला तजै तो शेष न शीष धरै भुव भारो।
पौन थके तो थके व्रज को पन कौन करै महिते रत न्यारो।
श्रीवल्लभबंस "विहारी" कहे कवि जागत हैं जग में जस थारो।

(७) मिटि गयी मौन पौनकी साधना की सुधि भूले भूली
भूली योग युगति बिसार्‌यौ तप बनको।
"सेख" प्यारे मनको उजारो भयो प्रेम नेम
तिमिर अज्ञान गुन ह्वास्यौ बालपन को।।
चरन कमल की मैं लोचननिलौच धरी रौचन है राच्यौ
सोच मिट्‌यौ धामधन को।
सो कलेस नेक न कलेस हू को लेस नहीं सुमिरिहौं
गोकलेस गौ कलेस मनको।।

(८) जै श्री गोकुलनाथजु त्रीनमाला राखी,....मायामत खंडन कियो... ।
- विष्णुदास छीपा (१५६७ - १५८० वि०सं०)
(See MS No.1/2 P.194, Kāṅkarolī noted in
Vārtā Sāhitya, P.247)